अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की मासिक पत्रिका

वर्ष : 50 अंक : 2 माघ-फाल्गुन वि.सं. 2079 फरवरी, 2023 सहयोग राशि- अठारह रुपये पृष्ठ-28 RNI 43602/77 ISSN No.2581-981X

सहयोग राशि के लिए
बैंक विवरण

BANK OF BARODA
Rajasthan Adult Education Association
Branch Name : IDS Ext. Jhalana Jaipur
I.F.S.C. Code : BARB0EXTNEH (Fifth Character is zero)
Micr Code : 302012030
Acct.No. : 98150100002077
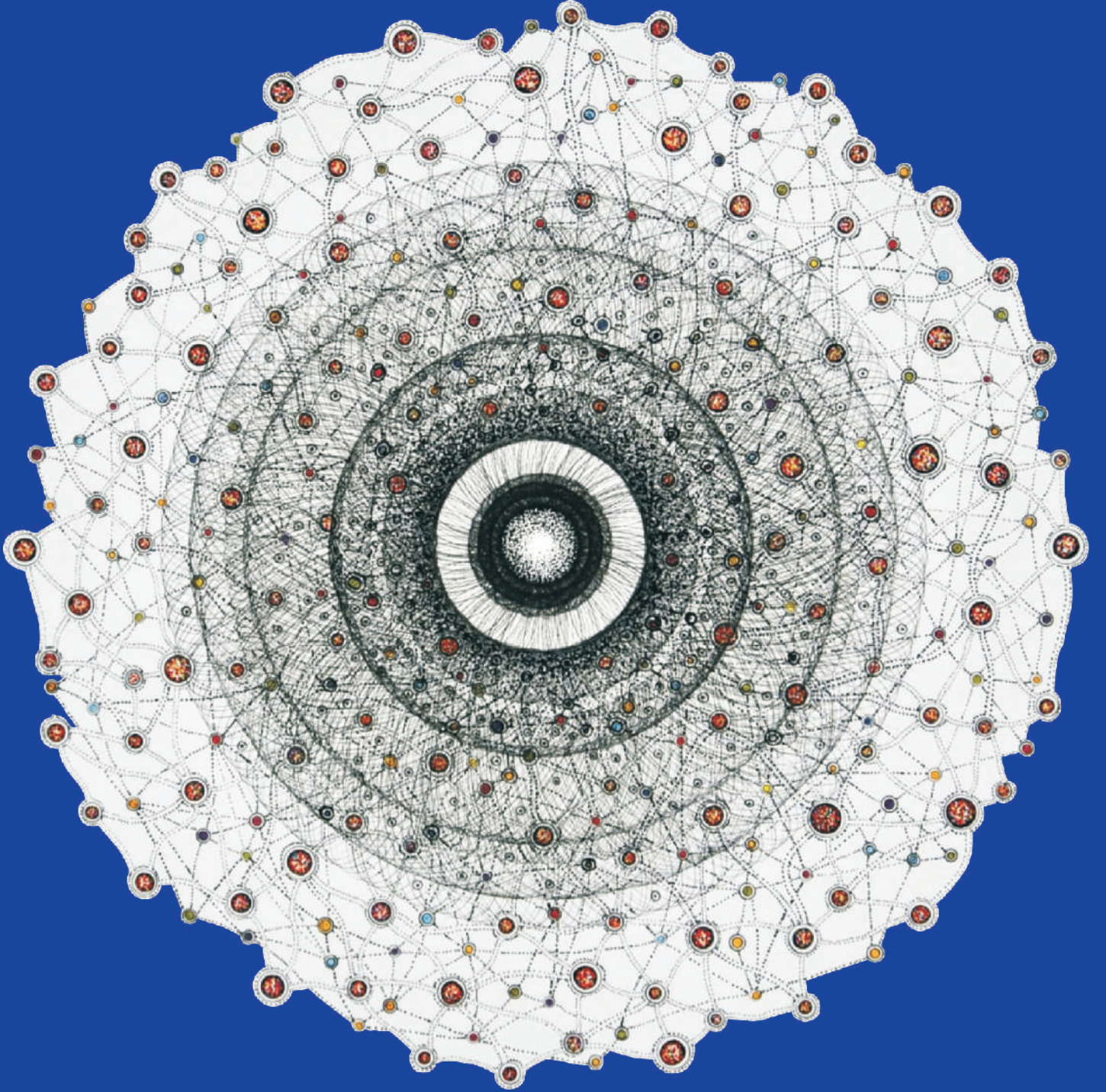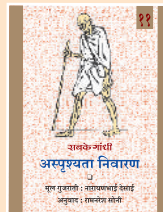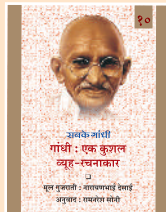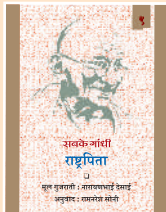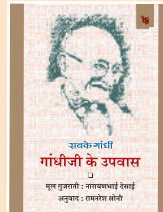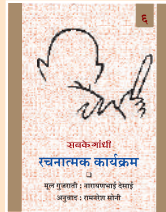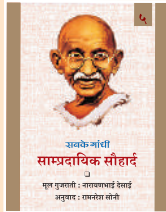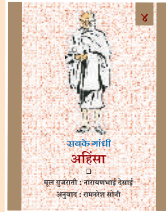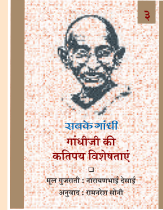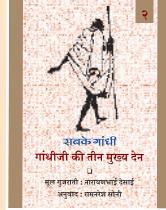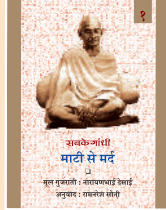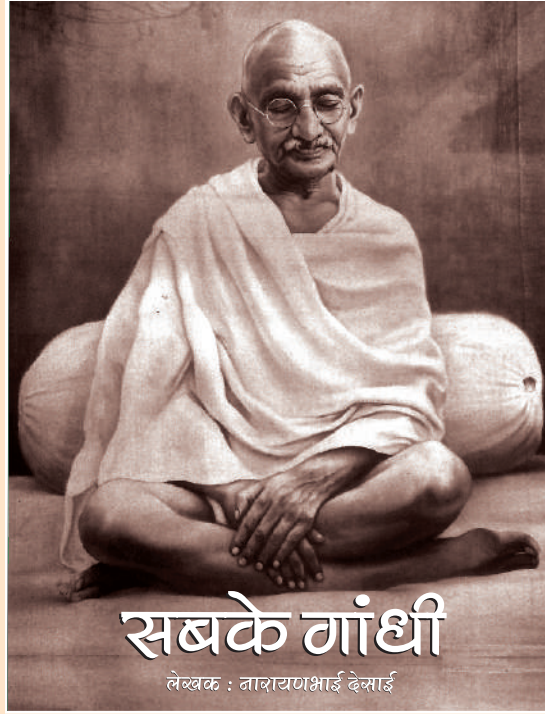
राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7–ए, झालाना संस्थान क्षेत्र,
जयपुर–302004
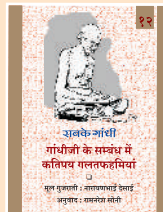
राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7–ए, झालाना संस्थान क्षेत्र,
जयपुर–302004

12 पुस्तकों के एक सैट की सहयोग राशि रुपये 500/– मात्र डाक खर्च अलग से देय होगा।

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणम् एनो
भूयिष्ठां ते नम उक्ति विधेम।।

ईशोवास्यपनिषद्

सब मार्गों के जानने वाले हे अग्निदेव! जिस रीति से हमें (अपने) ध्येय की (निश्चित) प्राप्ति हो, उस रीति से तुम हमें अच्छे रास्ते ले चलो। हमारे कुटिल पापों के साथ लड़ों (और उन्हें मिटा दो)। हम तुम्हें बार-बार नमस्कार करते हैं। ❑

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। ऋग्वेद

अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की पत्रिका

वर्ष : 50 अंक : 2 माघ-फाल्गुन वि.सं. 2079 फरवरी, 2023

क्र म

आवरण : शांति चन्द्रशेखर
आध्यात्म और विज्ञान का मेल बृह्माण्ड की रचना

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7-ए, झालाना डूंगरी संस्थान क्षेत्र,
जयपुर-302004
फोन : 2700559, 2706709, 2707677
ई-मेल : raeajaipur@gmail.com

अपनी बात

शिक्षा का एक नया आयाम जीवन विज्ञान

❑

मित्रो , अट्ठाइस फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के रूप में मनाया जाता है। विज्ञान प्रयोगों पर आधारित होता है। हमारे संपूर्ण जीवन के क्रियाकलापों का एक विज्ञान होता है वह है, **जीवन विज्ञान**। जीवन विज्ञान भावों का संतुलन है। जीवन विज्ञान परिष्कार है। यह परिष्कार दृष्टिकोण का परिष्कार है। यह व्यवहार का परिष्कार और भावना का परिष्कार है। यह विज्ञान व्यक्ति के मन, शरीर और अंतरात्मा से संबंधित भी है। इसी के साथ भाव का भी एक विज्ञान है और वाणी का भी एक विज्ञान है। उसी तरह से पानी का भी एक विज्ञान है। भोजन का अपना एक विज्ञान है। एक कहावत है जैसा खाए अन्न वैसा हो मन। जैसा पानी वैसी वाणी। शब्दों का एक बड़ा, संसार है। शब्द केवल शब्द ही नहीं है उनके गहरे अर्थ हैं। आनंद का भी एक भाव है और दुख का भी एक भाव। यह हम पर निर्भर करता है कि हम किस भाव में जीते हैं। जिस भाव में हम जीते हैं, हमारा शरीर वैसा ही रसायन उत्पन्न करता है।

यह सब विज्ञान का चमत्कार है। आपसी संबंधों का भी एक विज्ञान है। जब हम दूसरों के प्रति स्नेह, प्यार, दुलार का भाव रखते हैं तो सामने वाला बिना बोले ही हमारे प्रति प्यार का भाव रखता है। उस से आने वाली तरंगें हमें मैत्री और स्नेह का अहसास करा देती हैं। जरूरत है हमें अपने भीतर की यात्रा करने की। इस अंतर यात्रा में हम अपने से, अपने आप को देखें कि क्या हम मनुष्य होते हुए भी सही मायने में मनुष्य कहलाने के योग्य हैं? जब हम स्वार्थ, अहंकार, क्रोध लोभ जैसी बुराइयों को छोड़कर **बोध में जीने** का अभ्यास करेंगे और संकल्प करेंगे कि हमसे कोई भूल कर भी ऐसी भूल ना हो जाए जो समाज देश और दुनिया के लिए अहितकारी हो, विनाशकारी हो।

प्रज्ञावान मनुष्य होना भी एक विज्ञान है। व्यक्ति, समाज और दुनिया को समझना एक विज्ञान है। हर व्यक्ति परिवार और समाज की एक विधा होती है जिसे समझना और जानना जरूरी होता है। सबसे बड़ी बात विवेकवान होने की है। विवेकवान व्यक्ति अभयी होता है। जहां भय और शंका का कोई स्थान नहीं है। जहां भय और शंका हो वहां नियंत्रण जटिल से जटिल हो जाते हैं। जब तक आत्मानुशासन नहीं होगा तब तक उसके कोई मायने नहीं हैं। भीतर से अनुशासन जागने का अर्थ है कि वहां कोई बंधन नहीं है। केवल वहां निर्मल भाव है। वहां शांति और अमन के द्वार खुले हैं।

आज की शिक्षा प्रणाली में जीवन विज्ञान की शिक्षा बहुत जरूरी हो गई है। **आचार्य महाप्रज्ञ जी** ने जीवन विज्ञान को शिक्षा के एक नए आयाम के रूप में जोड़ने के प्रयोग किए थे। बौद्धिक विकास के साथ-साथ अध्यात्म, सहिष्णुता, उदारता, प्रेम और एकता के भावों का संतुलित विकास अपेक्षित है।❑ **प्रेम गुप्ता**

महामारी के बाद स्कूली शिक्षा

❑

माधव चव्हाण

❑

प्रतिष्ठित गैर–सरकारी संगठन 'प्रथम' की प्रतिवर्ष देश में शिक्षा के हालात पर जारी होने वाली रिपोर्ट 'असर' नीति निर्माताओं को ही नहीं समूचे तंत्र और शिक्षाविदों के लिये महत्वपूर्ण होती है। हाल ही में जारी वर्ष 2022 की रिपोर्ट कोविड महामारी के बाद की परिस्थितियों के बारे में गंभीर तथा नई दृष्टि देती है। इसलिये प्रथम फाउंडेशन के अध्यक्ष की यह टिप्पणी महत्वपूर्ण है। ❑ सं.

प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन के अध्यक्ष कोविड महामारी की पुनरावृत्ति की आशंकाओं के बावजूद, यह महामारी हमारी यादों से खो चुकी है। मेरे स्कूल के दोस्तों के व्हाट्सएप ग्रुप में किसी ने लॉकडाउन के पहले हफ्तों के दौरान पूछा था कि क्या हमें विश्वास है कि महामारी खत्म होने के बाद चीजें फिर से सामान्य हो पाएंगी? उनमें से कुछ को लगता था कि यह एक नई दुनिया होगी। उस वक्त हर तरफ 'न्यू नॉर्मल' की बात हो रही थी। ऑनलाइन शिक्षा को भविष्य के रूप में पेश किया गया था और इसी प्रकार घर से काम करने को देखा जा रहा था। लेकिन, लॉकडाउन शनैः शनैः खत्म होने लगा और महामारी का डर कम होने लगा। महामारी काल की भयावहता और उसकी पीड़ा भी हमारी व्यक्तिगत और सामूहिक स्मृतियों से लोप हो गई लगती है। हम जिस चीज के अभ्यस्त थे, उस तरफ वापस जाने में हमें राहत मिली, लेकिन कई नई चीजें हमारे जीवन का हिस्सा बन गई हैं और ऐसा लगता है कि हमने कुछ पुरानी आदतों को छोड़ दिया है। कौन सी नई चीजें उनके जीवन का हिस्सा बन गई हैं और क्या गायब हो गई हैं। यह लोगों की सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार परअलग–अलग हो सकती हैं। जब स्कूल बंद थे, तो उनसे जुड़े हुए प्रशासकों, शिक्षकों और छात्रों ने कुछ नए कौशल, अभ्यास और यहां तक कि विचारों को सीखा और आत्मसात किया। इनमें से कौन से बच गये हैं? और कौन सी पुरानी आदतें फिर से जाग उठी हैं?

असर 2022 की रिपोर्ट ग्रामीण क्षेत्रों में कई बड़े बदलावों की जानकारी देती है। 2022 में लगभग हर घर (95.8%) के पास एक सेल फोन है, जबकि 2018 में यह 90.2% के पास था। इसी अवधि में, स्मार्टफोन वाले परिवारों का अनुपात 36% से दोगुना होकर 74.8% हो गया है। कई राज्यों में यह 90% से ऊपर है। असर 2021 की रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया था कि 67.6% घरों में स्मार्टफोन हैं। एक साल के भीतर स्मार्टफोन और आगे व व्यापक तौर पर फैल गए हैं। मोबाइल फोन और स्मार्टफोन ग्रामीण परिवारों के लिए अब सामान्य बात है, जबकि अधिकांश शहरी लोगों के लिए यह एक पुरानी बात है। **असर** के लिये उचित ही यह सवाल रहा कि स्मार्टफोन शिक्षा के लिए कितने उपयोगी हैं? असर की 2021 की रिपोर्ट ने पाया कि जिन बच्चों के घर में स्मार्टफोन थे, उनमें से 26% की पढ़ाई के लिए उनकी पहुंच नहीं थी, जबकि 47% के पास कुछ

पहुंच थी। बाकी के पास हर समय पहुंच थी। इसमें कोई शक नहीं है कि लॉकडाउन के दौरान एनजीओ और स्कूल सिस्टम द्वारा सेल फोन और स्मार्टफोन का अलग-अलग तरह से इस्तेमाल किया गया लेकिन पहुंच का यह मुद्दा हर जगह मौजूद था। कुछ लोगों ने इसे ऑनलाइन शिक्षा कहा, जो वह नहीं थी। 'एड-टेक' भी एक लोकप्रिय शब्द बन गया है लेकिन हम अपनी जन शिक्षा में सुधार के लिए डिजिटल तकनीक की ताकत का उपयोग करने से काफी दूर हैं।

स्मार्टफोन की लोकप्रियता बढ़ने से पहले अधिकांश घरों में टेलीविजन का बोलबाला था। नतीजतन, पिछले चार वर्षों में टीवी सेट वाले परिवारों का प्रतिशत मुश्किल से 62.5% से 62.8% तक बदल सका है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि घरों में पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य पठन सामग्री की उपलब्धता 6.6% से घटकर 5.2% रह गई है। पढ़ने की जगह सुनना और देखना सामान्य हो चला है। क्या यह शिक्षा प्रक्रिया का हिस्सा बन जाएगा?

आशंका व्यक्त की गई थी कि आर्थिक परिस्थितियों के कारण बच्चे स्कूल छोड़ सकते हैं, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इसके बजाय, 6-14 आयु वर्ग में स्कूल में भर्ती न होने वाले बच्चों का पहले से ही कम अनुपात चार वर्षों में 2.8% से घट कर 1.6% तक रह गया है। अब स्कूल जाना हर बच्चे की आदत बन गया है। एक और बदलाव यह है कि बच्चों का एक बहुत बड़ा हिस्सा निजी स्कूलों से सरकारी स्कूलों में चला गया है। निजी स्कूल में नामांकन लगभग एक दशक से बढ़ रहा था। 2018 में 30.9% बच्चे निजी स्कूलों में भर्ती थे। 2022 में वे घटकर 25.1% रह गये हैं। यह 5.8 प्रतिशत की कमी निजी स्कूल नामांकन में अचानक 19 प्रतिशत की गिरावट और ग्रामीण सरकारी स्कूलों में नामांकन में 11 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। सरकारी स्कूलों ने इन 8 मिलियन या उससे अधिक बच्चों को बिना किसी झंझट के ले लिया है। यदि सरकारी स्कूल तंत्र का व्यापक बुनियादी ढांचा नहीं होता, तो निजी स्कूलों को छोड़ने वाले लाखों बच्चे बिना स्कूलों के रह जाते। हालांकि निजी स्कूलों से सरकारी स्कूलों में जाने की सबसे अधिक संभावना आर्थिक मजबूरीयों के कारण है, मगर यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि निजी ट्यूटर्स के पास जाने वाले सरकारी और निजी दोनों स्कूलों में बच्चों का प्रतिशत पहले से मौजूद 26.4 प्रतिशत से लगभग 4 प्रतिशत अधिक हो गया है। यह वृद्धि एक समान नहीं है लेकिन यह सभी राज्यों में हुई है। इसका मतलब है कि सरकारी और निजी स्कूलों में जाने वाले सभी ग्रामीण बच्चों में से 30% अब निजी ट्यूटर्स के पास भी जा रहे हैं। पश्चिम बंगाल और बिहार जैसे कई राज्यों में ट्यूशन एक परंपरा रही है, जहां निजी स्कूलों में जाने वाले बच्चों का अनुपात कम था और लगभग 70% बच्चे ट्यूटर के पास जा रहे थे। गांवों में बड़ी संख्या में युवा इन राज्यों में बच्चों को पढ़ाकर अपनी जीविका चलाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि महामारी के बाद की अवधि में निजी ट्यूशन की प्रथा अन्य राज्यों में फैल सकती है और बढ़ सकती है क्योंकि युवा शिक्षित लोग नौकरी के लिए तैयारी करते हैं और इंतजार करते हुए यह काम करते हैं।

कुछ दशक पहले, सार्वभौमिक शिक्षा के तीन 'ए' होते थे 'एक्सेस', 'अटेंडेंस' और 'अचीवमेंट'। नामांकन के आंकड़ों को देखते हुए, पहले 'ए' का मुद्दा हल हो गया है। अगला ए उपस्थिति है।

सरकारी स्कूलों में नामांकित बच्चों का अनुपात किसी भी दिन उनकी कक्षा में कितना होना चाहिए? **असर** ने पिछले एक दशक और उससे अधिक समय में भारत में उपस्थिति के व्यापक क्षेत्रीय पैटर्न पाये हैं। दक्षिणी और पश्चिमी राज्यों में उपस्थिति के आंकड़े ऊंचे 80% और उससे अधिक हैं। इसके विपरीत, मध्य और उत्तर मध्य राज्यों में ये आंकड़े पचास से लेकर सत्तर तक हैं। पूर्वी राज्यों में साठ से सत्तर प्रतिशत के बीच हैं। दो साल बंद रहने के बाद स्कूल खुलने के बावजूद ये पैटर्न नहीं बदले हैं। पुराने हालात जारी है। तीसरा 'ए' अचीवमेंट है। स्कूल बंद होने के कारण बच्चों को पढ़ाई में कमी का सामना करना पड़ा यह एक बड़ी चिंता है। लेकिन आंकड़ों को अलग-अलग कोणों से देखा जा सकता है जैसे गिलास आधा भरा या आधा खाली।

जुलाई 2020 में पहली कक्षा में 'प्रवेश' करने वाले अधिकांश बच्चों के पास पूरे एक वर्ष के लिए कोई नियमित कक्षा नहीं थी, और दूसरे वर्ष में एक बड़ा अनुपात टुकड़ों टुकड़ों में या बिल्कुल नहीं स्कूल गया। यदि यह मान लिया जाए कि सीखना केवल स्कूल की

कक्षाओं में होता है, तो आज तीसरी कक्षा के किसी भी बच्चे को पढ़ने या अंक ज्ञान का ज्ञान नहीं होना चाहिए। हालांकि, तथ्य यह है कि जबकि कक्षा तीन के 37% बच्चे 2018 में अखिल भारतीय स्तर पर सरकारी स्कूलों में कम से कम पहली कक्षा के स्तर का पाठ पढ़ सकते थे, यह अनुपात 2022 में केवल 7 प्रतिशत अंक गिरकर 30% रह गया है। निजी स्कूलों में 2018 में 61% छात्र कक्षा एक स्तर का पाठ पढ़ सकते थे, जिनका 2022 में घटकर 52% रह गया। सरकारी स्कूलों में यह गिरावट 2018 के स्तर से लगभग 20% है जबकि निजी स्कूलों में यह 2018 के स्तर से 15% है। बेशक, यह गिरावट अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग है और कुछ मामलों में पढ़ने के स्तर में गिरावट के बजाय सुधार पाया गया है। इन दिलचस्प मामलों पर अलग से विचार करना होगा, लेकिन मेरे लिए इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि स्कूल बंद होने के बावजूद बड़ी संख्या में बच्चों ने पढ़ना सीखा। अंकगणित के मामले में अखिल भारतीय स्तर पर कक्षा तीन या आठवीं कक्षा तक किसी भी उच्च कक्षा के बच्चों के अनुपात में केवल छोटे बदलाव पाए गए हैं, जो कम से कम दो अंकों के जोड़ बाकी कर सकते हैं। यह ऐसा है जैसे स्कूल बंद हुए ही नहीं हों।

तो, अगर लगभग इतने ही अनुपात में बच्चों ने पढ़ना और बुनियादी संख्या सीखी, चाहे स्कूल दो साल के लिए खुले हों या बंद, बच्चों ने कैसे सीखा? उन्हें किसने सिखाया?

असर 2021 ने पाया कि लगभग 70% बच्चों के पास घर पर मदद करने वाला कोई न कोई था। यह मददगार थे माता, पिता या भाई-बहन। ऐसालगता है कि शिक्षकों ने जहां संभव हुआ सामग्री और निर्देश देने के लिए फोन किया या घर का दौरा किया या डिजिटल उपकरणों का इस्तेमाल किया।

यह मान लेना ठीक होगा कि कुछ न कुछ तो सीखा ही जाएगा जब कोई सीखने को तैयार हो, कोई मदद करने को तैयार हो, सीखने के लिए कुछ सामग्री हो और शिक्षार्थी का कुछ मात्रा में जुड़ाव हो। **असर 2021** ने पाया कि लगभग 70% बच्चों के पास घर पर मदद करने वाला कोई न कोई था। यह मददगार थे माता-पिता या भाई-बहन। ऐसा लगता है कि शिक्षकों ने जहां संभव हुआ सामग्री और निर्देश देने के लिए फोन किया या घर का दौरा किया या डिजिटल उपकरणों का इस्तेमाल किया। इसके अलावा जैसा कि पहले चर्चा की गई, 30% बच्चों को निजी ट्यूटर्स द्वारा मदद की जाती है। असर सभी बच्चों के लिए बहुत ही मूलभूत स्तर पर सीखने को मापता है, इसलिए हम पहले से ही अति महत्वाकांक्षी पाठ्यक्रम के उच्च स्तर पर सीखने के नुकसान पर टिप्पणी नहीं कर सकते। यह एक उचित अनुमान है कि उच्च स्तर पर नुकसान अधिक हो सकता है, विशेष रूप से तब जबकि पाठ्यपुस्तकों को याद करने पर जोर दिया गया है।

इस बात पर गहराई से शोध करने की आवश्यकता है कि स्कूल बंद होने के दौरान बच्चों ने घर पर कैसे सीखा होगा। स्कूल से घर का अलगाव पुरानी प्रथा है। उन्हें एक साथ लाना एक नया तरीका है जिसमें परिवार और शिक्षक, गाँव और स्कूल मिलकर बच्चों को कौशल और ज्ञान सीखने में मदद करते हैं। क्या प्रौद्योगिकी सहायता के साथ इस प्रकार की हाइब्रिड होम-स्कूलिंग शैक्षिक प्रणाली या कल के स्कूलों के लिए मॉडल का प्रतिनिधित्व कर सकती है? हम प्रौद्योगिकी की सहायता से सीखने की प्रभावशीलता के बारे में बहुत कम जानते हैं - जिनमें से बहुत कुछ महामारी के दौरान हुआ। तकनीकी क्षेत्र यह समझने में और अधिक निवेश कर सकता है कि क्या काम किया (या काम करता है) और क्या नहीं।

लॉकडाउन ने स्कूल से घर के अलगाव को समाप्त करने को प्रोत्साहन दिया हो सकता है। पुराने दिनों में बच्चों की शिक्षा में समुदाय और माता-पिता की भागीदारी के बारे में बहुत बात की जाती थी, लेकिन व्यवहार में इसका मतलब आमतौर पर कभी-कभी समिति की बैठकों में भाग लेना भर होता था। महामारी के बाद के काल में, माता-पिता को अपने बच्चों की शिक्षा में और अधिक भागीदारी की संभावना को गंभीरता से तलाशना चाहिए। 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षा की प्रक्रिया में समुदायों और अभिभावकों को शामिल करने की बात करती है। स्कूल बंद होने की अवधि के दौरान

अनुभवों पर आगे बढ़ना अच्छा होगा। इस दौर ने वह भी तोड़ दिया जिसे डिजिटल बैरियर कहा जा सकता है। ज्यों-ज्यों बच्चों तक पहुंचने की आवश्यकता जरूरी होती गई, सभी स्तरों पर प्रौद्योगिकी का प्रतिरोध ध्वस्त हो गया। महामारी ने ऑनलाइन संसाधनों/पाठ्यक्रमों तक पहुंचने के लिए शिक्षकों की क्षमता को गति दी। सरकार ने कहा है कि शिक्षक 'निष्ठा', 'दीक्षा' आदि जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के साथ-साथ अन्य ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का उपयोग निगरानी, मूल्यांकन आदि के लिए जिसमें कम समय में बड़े पैमाने पर अपस्किलिंग शामिल है करें। लेकिन डिजिटल समाधान बच्चों को सीखने के लिए संदेश, लिंक और अटैचमेंट भेजने पर निर्भर करते हैं। पाठ्यपुस्तकें और पाठ प्रमुख रहे हैं। शिक्षा प्रणाली को चालू रखने की जरूरत में, सामग्री और शिक्षाशास्त्र के साथ प्रयोग के लिए कोई जगह नहीं थी। अब स्कूल मॉडल पर प्रयोग करने और उसमें सुधार करने का समय आ गया है।

एक ऐसे मॉडल की कल्पना करना संभव हो जिसमें स्कूल एक ऐसा स्थान है जो आंशिक रूप से एक गांव में 3-8 या 3-10 आयु वर्ग के लिए डे-केयर सेंटर के रूप में कार्य करता हो और आंशिक रूप से आधारभूत कौशल और ज्ञान सीखने के स्थान के रूप में कार्य करता हो।

आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मक मिशन द्वारा उल्लेखित लक्ष्यों के आधार पर 8 वर्ष की आयु तक सभी बच्चे मूल बातें सीख सकते हैं। 8-10 और 11-14 के बड़े आयु समूहों में, बच्चों के लिए उन समूहों में बैठकर सीखना संभव होना चाहिए जिन्हें स्कूल शिक्षण सामग्री और प्रशिक्षकों के संसाधन की मदद होती है। रटने की बजाय इस आयु वर्ग के लिए कौशल और सीखने के तरीकों को सीखना सबसे महत्वपूर्ण होता है। प्रौद्योगिकी का उपयोग और माता-पिता से घर पर मदद पूरी तरह से संभव है। वास्तव में, जैसा कि हम मध्यवर्गीय घरों में देखते हैं, माता-पिता अक्सर अपने बच्चों को पढ़ाई में मदद करने के लिए उनके साथ बैठते हैं। माता-पिता को अपने बच्चों को घर पर और बच्चों के समूहों में मदद करने के लिए तैयार करना पूरी तरह से संभव होना चाहिए। जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं, बच्चों को अधिक स्वतंत्र शिक्षार्थी बनना चाहिए, एक 'शिक्षक' के साथ कम समय बिताना चाहिए और संसाधन व्यक्तियों के साथ व्यक्तिगत रूप से और ऑनलाइन अधिक समय बिताना चाहिए।

प्रौद्योगिकी का उपयोग और माता-पिता से घर पर मदद पूरी तरह से संभव है। वास्तव में, जैसा कि हम मध्यवर्गीय घरों में देखते हैं, माता-पिता अक्सर अपने बच्चों को पढ़ाई में मदद करने के लिए उनके साथ बैठते हैं।

पाठ्यक्रम और परीक्षा प्रणाली दो प्रमुख कारक हैं जो प्रणाली को अत्यधिक कठोर बनाते हैं। मानसिकता में बदलाव और प्रौद्योगिकी के रचनात्मक उपयोग से लचीलापन आएगा। कठोरता हमारी पुरानी मानसिकता का हिस्सा है। महामारी ने हमें स्कूली शिक्षा को अलग तरह से देखने के लिए मजबूर किया है। स्कूल प्रणाली ने चुनौती का सामना किया और विभिन्न समाधानों को आजमाने के लिए लचीला हो गया। यह जानना महत्वपूर्ण है कि जब स्कूल बंद थे तब हमने क्या किया और कैसे किया? यह अत्यधिक प्रतिबंधों का दौर था लेकिन इसने नए विचारों को आज़माने की आज़ादी भी दी। अब चूंकि कोई प्रतिबंध नहीं है, हमें नए विचारों को आजमाने और नए मानदंड बनाने के लिए बदलती मानसिकता के साथ बने रहने की जरूरत है।

2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता के महत्व पर जोर देकर अच्छा किया है। मूलभूत साक्षरता और न्यूमेरेसी मिशन जो इस नीति से चलता है, अब निर्धारित लक्ष्यों की उपलब्धि का नेतृत्व कर रहा है। यह नीति स्कूली शिक्षा के दृष्टिकोण में मानसिकता बदलने के लिए प्रोत्साहन भी प्रदान करती है। नीति से परे जाकर इस बात के संकेत मिल रहे हैं कि सरकारें मिशन को काफी गंभीरता से ले रही हैं।

भारत जल्द ही दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला युवा देश होगा। यह नए विचारों की नई दुनिया है। यह महत्वपूर्ण है कि हम एक उदाहरण स्थापित करें और दुनिया को शिक्षा का एक नया मॉडल दें। हमें पुरानी आदतों को त्याग कर शिक्षा के लिए नए मानदंड बनाने हैं। ❑

लेख

स्कूलों की बेहतरी : राजनेताओं पर बने दबाव

❑

मुझे लगता है कि देश में आर्थिक प्रगति को पाने और औद्योगीकरण की जरूरतों को पूरा करने के लिए कुशल श्रमिक तैयार करने पर जोर कुछ अधिक ही रहा है और मुझे लगता है कि हमें इसमें बेहतर संतुलन की जरूरत है।

लोगों के जीवनयापन की जरूरतें पूरी होनी जरूरी है, खासकर हमारे जैसे देश में, जहां बहुत सारे लोग हैं जो बिना नौकरी के हैं, बहुत सारे परिवार हैं जो अपने छोटे बच्चों को गरीबी से बाहर निकालने और उन्हें आगे बढ़ाने की आशा करते हैं। इसलिए लोगों को इस प्रकार सक्षम बनाने की जरूरत है कि वे अपने पांवों पर खड़े हो सकें तथा रोजगार पा सकें। लेकिन उन्हें अच्छे नागरिक बनाने की भी जरूरत है। सामान्य तौर पर शिक्षा हमेशा दोनों के बारे में होती है।

कुछ ऐसे हो सकते हैं जिन्हें रोज़गार की चिंता न हो और इसलिए वे जीवन पर चिंतन कर सकते हैं तथा दर्शन और धर्म का अध्ययन कर सकते हैं। लेकिन ऐसा भी नहीं है कि दर्शनशास्त्र और धर्म का अध्ययन करने वालों को नौकरी नहीं मिल सकती। उनको उन विषयों का अध्ययन करने के साथ जीविकोपार्जन करने में भी सक्षम होना चाहिए।अतः मुझे लगता है कि हमें दोनों को मिलाने और संतुलित करने की जरूरत है। हमने ऐसा कर पाने का बेहतर काम नहीं किया है।

मुझे लगता है कि सीखने की प्रक्रिया पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कौन सी विशिष्ट सामग्री पढ़ाई जा रही है।चाहे मैं भारत का इतिहास पढ़ाऊं, चाहे मैं ग्रेट ब्रिटेन का इतिहास पढ़ाऊं या मैं सुमात्रा और जावा का इतिहास पढ़ाऊं– जब हम इतिहास पढ़ा रहे हों तो बच्चों को यह समझने की जरूरत है कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया क्या है, समाज कैसे बदलते हैं, परिवर्तन की उस प्रक्रिया को कौन लाया, और वे कौन लोग थे जो परिवर्तन के वाहक बने; यही हमें विद्यार्थियों को समझाने की जरूरत है।

इसलिए मुझे लगता है कि हमें वास्तव में यह देखना चाहिए कि विशिष्ट कौशल सेट कैसे होते हैं – चाहे यह एक विश्लेषणात्मक कौशल सेट हो, चाहे वह गणितीय समझ हो, चाहे वह तुलना हो (आप तुलनात्मक विश्लेषण कैसे करते हैं)। यह सभी चीजें हैं जिन्हें हम चाहते हैं कि बच्चे समझें। वह कौशल और क्षमताएं हैं जिन्हें तय करने और

आतिशी मार्लेना

❑

लेखिका
दिल्ली की एक शिक्षिका जिसने दिल्ली के शिक्षा मंत्री के सलाहकार के रूप में कार्य किया है । ❑ सं.

जिनकी योजना बनाने की हमें आवश्यकता है।

मूल रूप से समस्या यह है कि किसी राजनेता को इसकी फिक्र नहीं है कि सरकारी स्कूलों को बेहतर चलाने के लिए कोई प्रोत्साहन दिया जाय। और मुझे लगता है कि नागरिकों के रूप में यहीं हमसे गलती हुई है।

वह मुख्य प्रोत्साहन क्या है जो एक राजनेता को काम करने के लिए प्रेरित करता है? इसका जवाब है, वे फिर से निर्वाचित होना चाहते हैं। हर राजनेता यही चाहता है, अगला चुनाव आएगा, मुझे फिर से वो चुनाव जीतना है। अभी तो यह होता है कि एक राजनेता सोचता है, और यह सही भी है कि अगर मैं चुनाव पर पर्याप्त पैसा खर्च करता हूं- अगर मैं पैसा, शराब, कम्बल, टीवी, सब कुछ बांटता हूं- तो मैं सत्ता में फिर आ जाऊंगा। या फिर एक राजनेता या राजनीतिक दल सोचता है कि मुझे बस सही जातीय समीकरण चाहिए और मेरा उम्मीदवार जीत जाएगा, या मुझे अपने उम्मीदवार का सही धर्म चाहिए और फिर मेरा उम्मीदवार जीत जाएगा। इसलिए अभी राजनेताओं को लगता है कि दोबारा चुनाव जीतने के लिए यही जरूरी है। सरकारी स्कूल में सुधार, सरकारी अस्पताल में सुधार, अच्छा सार्वजनिक परिवहन उपलब्ध कराना आदि की क्या जरूरत है?

अब हमारे लिए नागरिक के रूप में- और यहां मैं एक राजनेता के रूप में नहीं कह रही हूं, मैं एक नागरिक के रूप में बोल रही हूं- मुझे लगता है कि नागरिकों के रूप में हमें अपने चुने हुए प्रतिनिधियों और हमारी सरकारों पर दबाव बनाने की जरूरत है।

अगर, एक राजनेता के रूप में जब मुझे फिर से निर्वाचित होना है और मुझे पता चलता है कि जब मैं अब से पांच साल बाद किसी के दरवाजे पर दस्तक देने जाऊंगा तब मेरे इलाके में, मेरे निर्वाचन क्षेत्र में हर व्यक्ति मुझसे पूछने जा रहा है भाई, आपने सरकारी स्कूल का क्या किया? अगर आप सरकारी स्कूल नहीं ठीक करेंगे तो हम आपको वोट नहीं देंगे। तो यकीन मानिए, हर राजनीतिक क्षेत्र का हर राजनेता अपने मोहल्ले के सरकारी स्कूलों को बेहतर बनायेगा। और यही वह दबाव है जो हमें अपने सभी राजनेताओं पर बनाने की जरूरत है। ❑
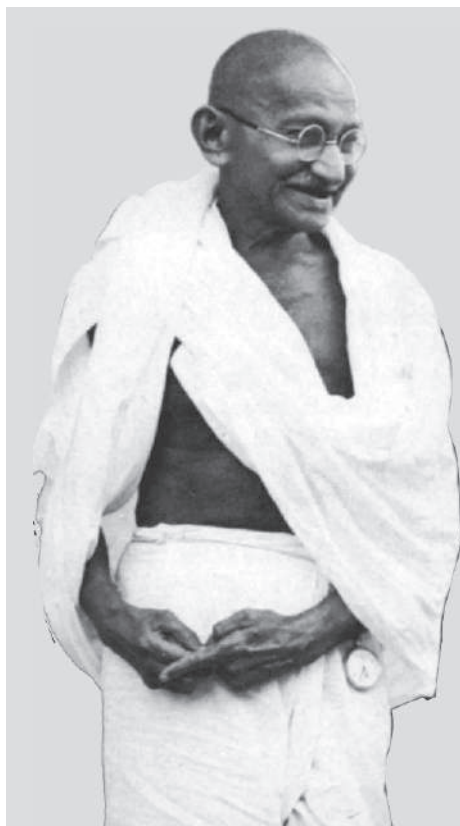
एक पैसे की ऊंची बोली

❑

1934 की बात है, जब बिहार में आये भयानक भूकम्प ने वहां भीषण ताण्डव किया था। चंपारण जिले के चाइता घाट पर गांधीजी की मार्मिक अपील पर, पचासों स्त्रियां अपने जेवर उतार–उतार कर संकट निवारण फण्ड में दे रही थीं। वहीं पर खड़ी एक गरीब बुढ़िया हाथ जोड़कर किसी से कह रही थी कि कुछ पैसे मुझे उधार दे दो न, गांधी महात्मा के चरणों पर चढ़ाने के लिए। तुम्हारे पैसे मजूरी करके कल ही चुका दूंगी। बेचारी को उधार मिल तो गया, पर सिर्फ एक ही पैसा मिला। गांधीजी को एक पैसा देते हुए उसे संकोच हो रहा था। गांधी जी ने बुढ़िया के हाथ से पैसा ले लिया और कहा कि बूढ़ी माई, तेरा यह दान कोई छोटा दान नहीं है। इसकी बहुत बड़ी कीमत है। और उस एक पैसे को गांधीजी ने नीलामी पर चढ़ा दिया। उस पैसे की ऊंची बोली लगी थी।❑

पुस्तक गांधीजी और उनके सपने ❑ वियोगी हरि

लेख

एक पाती
पिता की बेटे के नाम

❑

अविनाश जोशी

❑

कवि अविनाश जोशी ने अपने बेटे अभिनंदन को उसके जन्मदिन पर सीख देने वाला एक सुंदर पत्र लिखा जिसे हम संपादित रूप में यहां दे रहे हैं। ❑ सं.

बेटे!

आज तुम जीवन के 22 वर्ष पूर्ण कर एक नए परिवेश में अपने जीवन को देखने के लिए उत्सुक होंगे। सोचा कुछ दिल की बातें तुम से कर लूं। रफ्तार वाली ज़िन्दगी में कुछ बातें हम कह पाते हैं कुछ कह नही पाते हैं। सोचता हूं कि मैं जो कुछ महसूस करता हूं उसे आज कागज पर उतार ही दूं।

जब तुम मेरे साथ होते हो तब अक्सर बहुत सी बातें पूछते रहते हो और मैं उनका जवाब देने की कोशिश करता हूं।तुम लोग अपनी ज़िन्दगी में मशगूल हो और मैं अपनी आजीविका कमाने में। दोनों बस भागे जा रहे हैं। आज रुक के कुछ बाते कर लें!

अथाह प्यार कई बार भ्रंतिया पैदा करता है। हर इच्छा का पूरी हो जाना कई बार सन्देह पैदा करती है। तुम लोग कई बार ऐसे अज्ञात फलसफे में जीने लगते हो जो ज़िन्दगी की हकीकत से कोसो दूर होता है। हां, यह सच है कि हम तुम्हें ज़िंदगी के उन अभावो से रूबरू नहीं कराना चाहते जो कड़वे हों। लेकिन उन्हें जानना जरूरी है क्योंकि वे वे जीने के बहुत से तरीके सिखा जाते है। कुछ हमें नज़र आते हैं कुछ अज्ञात होते हैं। विद्याध्ययन आजकल आजीविका के लिए अत्यंत महत्वपुर्ण हो चला है। कईं बार हम अपने आमोद-प्रोमोद में ज़िन्दगी के असली मकसद को भूल जाते हैं। इस भौतिक युग में हमारी बुनयादी आवश्यकताएं पूरी करने के लिए पैसे का महत्वपूर्ण स्थान है लेकिन वह नियोजित तरीके से कमाया जाये तो बेहतर है। मानव मूल्यों को कभी ताक पर मत रखना। हम अनेक बार अपने को दुनिया से ज्यादा समझदार मानने लग जाते हैं। यह गफलत नहीं हो तो अच्छा है क्योंकि रास्ता जानने के लिए भी तो अनजान राहगीर की सलाह ली ही जाती है।

मुझे आशा है कि तुम समझोगे कि दुनिया एक है और उसमें रहने वाले भी हमारे भाई-बहन हैं। जब तुम उम्र में और बड़े हो जाओगे तब तुम दुनिया और उसके आदमियों का महत्व समझ पाओगे। एक गरीब के भी दिल होता हैऔर वह भी मंहगा जंक फूड खाने की लालसा कर सकता है। कभी सोचना कि क्या उसके मां-बाप उसकी सब इच्छाएं पूरी नहीं करना चाहते? क्या वे ऐसी ख़ुशी नहीं चाहते? फर्क सिर्फ अभाव और भराव का है। तुम्हारे पास यदि है तो हमेशा दूसरों की मदद की आदत डालना। कोई लेता है तो उसकी मजबूरी समझना। मदद एवं सहयोग का

भाव लाना, न कि किसी की बेचारगी का। मानवीय भावनाओं को पढ़ना सीखना।

तुमसे एक बात का और जिक्र करूंगा। आज हम डिजिटल क्रांति के जमाने में जी रहे हैं जिसके परिणाम जितने अच्छे हो सकते हैं उतने बुरे भी हो सकते हैं। मोबाइल फ़ोन, लेपटॉप आदि यंत्रों को अपने जीवन पर हावी मत होने देना। इन्हें भोग की वस्तु मत बनाना। नई यंत्र–तकनीक से हम दुनिया को बेहतर तभी बना सकते हैं जब हम उसे सही तरीके से जान सकें और समझ सकें। दुनिया में जितनी भी वस्तुएं स्वाद एवं सुंदरता से परिपूर्ण हैं, जरूरी नहीं कि वे सभी हमारे जीवन के लिए भी उपयुक्त हों। दुनिया को समझना और फिर अपने विवेक से निर्णय लेना।

जिन बातों का हल पाठ्य–पुस्तकों में नहीं मिलता वह जीवन की किताब में मिलता है। जीवन की किताब को पढ़ने के लिये भी अभ्यास की जरूरत होती है। बहुत से तो इस किताब को पढ़ने में अपनी सारी उम्र खपा देते हैं। इसलिए किताबों के साथ–साथ अपने अनुभवों से भी तुम अपना जीवन व्यवस्थित करना सीख सकते हो।

कई बार लगता है कि चीखने–चिल्लाने या ज़िद से काम आसानी से हो जाता है। धैर्य व शांति से काम को अंजाम देने की कोशिश करोगे तो जीने का मज़ा आएगा। अपने लिये कुछ रियायत की उम्मीद मत करना। अपने कार्यक्षेत्र में हमेशा मेहनत करके आगे रहने की आदत डालना। दुनिया तुम्हें प्यार करेगी।

अपने प्रत्येक जीवन की किताब को रोचक व रोमांचक बनाना ताकि लोग उसमें रुचि ले सकें और तुमसे मिल कर खुश हो सकें। अपने प्रत्येक जन्म दिन पर कोई एक नेक काम अवश्य करना और उसका अहंकार मत रखना। कोई समस्या आये तो कभी तनाव मत लेना, समाधान ढूंढना। ऐसा करोगे तो तुम्हें सब खुशियां मिलेंगी। लाख बुलन्दियां हासिल कर लेना लेकिन अपना सिर बुजुर्गों के सामने विनम्रता से झुकाए रखना। बुजुर्गों का साया पेड़ों की शीतल छाया की तरह होता है। उनके आशीर्वाद को दुनिया का सबसे बड़ा धन मानना। धन तो तुम कभी भी कमा लोगे लेकिन बुजुर्गों का साया हमेशा नहीं रहने वाला।

सबसे प्यार और आदर पाने का यत्न करते हुए हमेशा चहकते रहना और हमेशा मुस्कराते रहना।

इसी कामना के साथ! ❑

303, अकासिया अपार्टमेंट, सिद्धार्थ नगर,
एच ब्लॉक, जयपुर–302017
मो. नं.–9829050010

हृदय की शिक्षा–1

❑

दो शब्द हृदय की शिक्षा के बारे में। मैं नहीं मानता कि वह पुस्तकों के द्वारा दी जाती है। यह काम शिक्षक के सजीव संपर्क के द्वारा ही किया जा सकता है। तब यह सवाल उठता है कि प्रारंभिक तथा माध्यमिक पाठशालाओं में जो शिक्षक हैं, वे कैसे हैं? क्या वे श्रद्धावान और चरित्रवान स्त्री–पुरुष हैं? क्या उन्होंने खुद हृदय की तालीम हासिल की है ? क्या उनसे यह भी आशा रखी जाती है कि वे अपने संरक्षण में रखे गये लड़कों और लड़कियों के स्थायी तत्त्व की–उनके नैतिक विकास की देखभाल कर लेंगे? क्या नीचे की पाठशालाओं के लिए शिक्षकों की नियुक्ति का तरीका चरित्र–विकास के लिए पूरी रुकावट नहीं है ? क्या शिक्षकों को जीवन–वेतन भी मिलता है? हमें मालूम है कि प्रारंभिक पाठशालाओं के शिक्षक अपने देश–प्रेम के कारण नहीं चुने जाते हैं। इस काम में वे ही लोग आते हैं जिन्हें और कोई नौकरी नहीं मिलती। ❑ गांधी जी

(यंग इंडिया, 1.9.1921)

नन्दकिशोर आचार्य की कविताएं

❑

घर का ख्वाब

❑
घर वह ख्वाब
जिस की कभी ताबीर नहीं होती :
उस के हर कोने-अन्तरे ने
चाहा है मुझ को
पर वैसे नहीं
जैसे चाहा जाना चाहता था मैं
सभी चाहते रहे
अपनी तरह से मुझे

बाहर आया जब
तो जता दिया उस ने भी
साफ़-साफ़ मुझ को
-मेरे साथ रह लो
जब तक जी चाहे
पर बाहर हूं मैं
घर नहीं हो सकता

घर का ख्वाब संजोये
इसी तरह
बेघर रहते हैं हम।❑

अतीत में

❑
ज्यों-ज्यों
गुज़रते हैं दिन
नज़दीक आता जाता है
भवितव्य
लौटता जाता हूं
मैं क्यों अतीत में

अतीत में जीते रहना
जीवन है
या मृत्यु का ही
एक और प्रकार ! ❑

यादें

❑
कल की होती हों चाहे
ख़ुद कल नहीं होतीं
कभी यादें

कल नहीं
वे सदा आज होती हैं
बल्कि अभी, इसी क्षण
बेकल करती हुई मुझे।❑

शृंगार

❑

हां, अब प्रतीक्षा में हूं
नहीं, मृत्यु की नहीं
अपनी भस्म के शृंगार होने की
उस महाकाल का
उस महाजीवन का
मृत्यु भी होती है शृंगार जिस का

मृत्यु वस्ल है अस्ल जीवन से
शेष जो रह जाता
व्यभिचारी है वह -
लेकिन उस के बिना
रस-निष्पत्ति कैसे हो ! ❑

खुश है ठूंठ

❑

जानता है वह
नहीं कर पाएगी अब
कोई भी बरसात उस को
हरा -
गला देगी बल्कि थोड़ा और

फिर कुछ काई
जो उग आएगी उस पर
सोचता उस को
ख़ुश है ठूंठ। ❑

सूखा हरा

❑

हरा था अभी
कल तक जो
लो गया है सूख
फिर हरा होने
सूखने के लिए

सूख जाने की ख़ातिर
खिलता है यह हरा
या सूखता है
फिर हरा होने

नहीं, हरे या सूखे के
कुछ नहीं हैं मानी
सूखते जाने में
खिलता रहता है जो
हरे होते जाने में फिर वही
मुरझाता रहता है। ❑

सूख गया तो क्या

❑

सूख गया तो क्या
झरना है वह
जल से नहीं
झरने से हुआ है जो

जल नहीं है तो क्या
सूखापन कोई
झरता रहता है
अनवरत उस से
जल की याद में उच्छलित
भिगोता हुआ मुझ को। ❑

नया वर्ष : इंसान बनने का लें संकल्प

❑

राजेन्द्र भाणावत
❑

भारतीय प्रशासनिक सेवा से सेवानिवृत्त अधिकारी एवं समिति के पूर्व अध्यक्ष श्री राजेन्द्र भाणावत का यह लेख हमें 'इंसान' बने रहने के दृढ़ संकल्पों की सिफारिश करता है। ❑ सं.

देखते देखते एक वर्ष और बीत गया। हमने 2022 को अलविदा कह दी और 2023 में प्रवेश कर गए।

प्रति वर्ष नव वर्ष के प्रारंभ पर संकल्प लिए जाते हैं, जिनमें से अधिकांश पहले ही महीने में तोड़ भी दिए जाते हैं। इस बार भी लोगों ने संकल्प लिये होंगे जिनमें से कुछ ऐसे होंगे जिन्हें निभाया जाएगा तो कुछ ऐसे भी होंगे जो बीच में छोड़ दिए जाएंगे। हम यदि समाज और देश की बात करें, तो यह विचारणीय है कि देश के नागरिक किस प्रकार का संकल्प लेकर अपने को बेहतर बना सकते हैं! मुझे लगता है कि सभी संकल्पों में श्रेष्ठ एवं उपयुक्त संकल्प यह होगा कि हम सब इस वर्ष इंसान बने रहें। पूछा जा सकता है कि इंसान तो हम हैं ही, इंसान बनने से क्या मतलब है? मेरा मानना है कि प्रकृति ने हमें पुरुष या स्त्री तो बना दिया किंतु हममें से अनेक इंसान नहीं बन पाते। अनेक बार हमारा हैवानियत का रूप देखने में आता है। मनुष्य कभी शैतान का रूप बन जाता है और कभी भगवान का। यदि हम भगवान नहीं बन सकें तो कोई बात नहीं, कम से कम शैतान तो न बने। यही मानवता के लिए सर्वाधिक उपयुक्त संकल्प होगा।

हाल ही में जिस प्रकार से राजस्थान लोक सेवा आयोग और अन्य भर्ती परीक्षाओं के पेपर लीक होने के समाचार लगातार मिल रहे हैं, उससे तो यही लगता है जो लोग इस पेपर को आउट करने में संलिप्त रहे हैं,वे इंसान कहलाने के लायक तो कतई नहीं हैं। उन्हें इंसान कैसे कह सकते हैं जिन्होंने अपने स्वार्थ की खातिर लाखों युवाओं का भविष्य दांव पर लगा दिया। अधिकांश बेरोजगार युवा संपन्न परिवारों से नहीं आते। इनके पिता येन-केन प्रकारेण पैसे का इंतजाम कर, उन्हें पढ़ाते हैं और उनकी कोचिंग की फीस का इंतजाम करते हैं। सुनने में तो यह भी आ रहा है कि जो भर्तियां हो चुकी हैं, उनमें भी पेपर लीक कराने अथवा फर्जी डिप्लोमा, डिग्री बेचने का काम धड़ल्ले से हुआ है। इस कारण भर्तियां उन्हीं लोगों की हुई जो दलालों को धन राशि उपलब्ध कराने में सफल रहे और बिना वांछित योग्यता के सरकारी नौकरी भी पा गए। इस काम में सरकार की शिक्षा के निजीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति ने भी बहुत सहायता की है। अधिकांशतः जिन विश्वविद्यालयों की फर्जी डिग्रियों के समाचार मिल रहे हैं, वे सभी निजी क्षेत्र के हैं। इन विद्यालयों में सब कुछ होता है, शिक्षा प्रदान करने के अलावा।

इस प्रकार के विश्वविद्यालयों से फर्जी डिग्री प्राप्त कर जो लोग नौकरी में आ जाएंगे, उनका पहला काम यही होगा कि जो लाखों रुपए खर्च किए हैं, वे शीघ्रातिशीघ्र वसूल करें। इस हेतु वे, इंसानियत और अपनी नौकरी के कर्त्तव्य को त्याग कर गरीब लोगों का शोषण ही करेंगे।

मनुष्य द्वारा अपनी इंसानियत त्यागने के और भी कई ऐसे समाचार हम प्रति दिन समाचार पत्रों में पढ़ते हैं जिससे हमें स्वयं को इंसान कहने में भी शर्म आने लगती है। उदाहरण के लिए हाल ही में दिल्ली और गुड़गांव में हुई उन घटनाओं के वीडियो वाइरल हुए जिनमें मकान मालिकों को अपने घरेलू नौकरों के साथ मारपीट करते हुए घर से निकालते हुए दिखाया गया। संभ्रांत परिवारों के लोग कैसे आपस में भिड़ गए और सिक्योरिटी गार्ड की पिटाई कर दी, इसके वीडियो भी वाइरल हुए हैं। ये लोग कोई झुग्गी- झोपड़ी में रहने वाले नहीं, बल्कि बड़ी-बड़ी पॉश कॉलोनी में रहने वाले संपन्न परिवारों के व्यक्ति थे। हाल ही में थाई एयरवेज के वायुयान में जिस प्रकार भारतीय यात्रियों में सीट को सीधा करने के प्रश्न पर मारपीट हुई, उसने प्रत्येक भारतीय का सिर शर्म से झुका दिया।

हम एक दूसरे के प्रति इतने असहिष्णु हो गए हैं कि हमने अपनी इंसानियत को ताक पर रख दिया है। जिस प्रकार दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को सड़क पर तड़पने के लिए छोड़ दिया जाता है और सैकड़ों वाहन वहां से निकल जाते हैं, उससे भी यही लगता है इंसानियत दुर्लभ होती जा रही है।

मनुष्य द्वारा अपनी इंसानियत त्यागने के और भी कई ऐसे समाचार हम प्रति दिन समाचार पत्रों में पढ़ते हैं जिससे हमें स्वयं को इंसान कहने में भी शर्म आने लगती है। उदाहरण के लिए हाल ही में दिल्ली और गुड़गांव में हुई उन घटनाओं के वीडियो वाइरल हुए जिनमें मकान मालिकों को अपने घरेलू नौकरों के साथ मारपीट करते हुए घर से निकालते हुए दिखाया गया।

शिक्षक द्वारा अंक बढ़ाने के नाम पर छात्रा का शारीरिक शोषण किया जाता है, कोचिंग संस्थाओं द्वारा वहां पढ़ाई कर रहे छात्रों पर पढ़ाई का अत्यधिक दबाव बनाकर, उन्हें मानसिक अवसाद में धकेल कर आत्महत्या करने पर मजबूर किया जाने की घटनाएं भी सामने आई हैं। राजस्थान के कोटा शहर में आत्महत्या की कई घटनाएं हाल ही में हुई हैं। यह सब वे नौनिहाल हैं, जिन्हें मां-बाप ने बड़ा कष्ट सहकर, इस आशा के साथ कोटा में कोचिंग करने हेतु भेजा था कि वे ऊंचे संस्थानों में प्रवेश पाकर बुढ़ापे में उनके जीवन का सहारा बनेंगे। लेकिन वे तो असमय ही उन्हें जीवन भर के लिए कष्ट भोगने हेतु छोड़कर दुनिया से विदा हो गए। क्या कोचिंग संस्थानों के मालिकों के अपने स्वयं के परिवार में बच्चे नहीं हैं? किस प्रकार अपने परिवार से अलग रह कर बच्चों का मानसिक शोषण करने में वे एक बार भी नहीं सोचते? किस प्रकार केवल धन कमाने के लिए झूठे - झूठे वादे करके युवाओं को बरगलाया जाता है?

हमारे यहां तो यह मान्यता है कि कई जन्मों के अच्छे कर्मों के पश्चात् मनुष्य योनि प्राप्त होती है। इसके बाद भी यदि ये इंसानियत छोड़ दें, तो इसे हम क्या कहेंगे? ऐसा व्यक्ति जो अपने ही जैसे मानव को किसी भी प्रकार से प्रताड़ित करने में, शोषित करने में अथवा उसकी हत्या तक करने से बाज नहीं आता, वह इंसान कहलाने के लायक तो नहीं हो सकता। इस नये साल में इतना तो कर ही सकते हैं कि किसी रिश्तों में यदि मधुरता न भी बढ़ा सकें और किसी के साथ अच्छा व्यवहार न भी कर सकें तो कम से कम किसी के साथ कड़वा व्यवहार तो ना करें। यदि हम किसी के रास्ते को सुगम न बना सकें, तो हम उसमें बाधा तो उत्पन्न ना करें। यदि हम किसी दूसरे व्यक्ति के जीवन में उजियारा न कर सकें,तो कम से कम अंधकार करने का माध्यम तो न बनें। यदि हम किसी व्यक्ति को स्वस्थ न रख सकें, तो उसे बीमार रखने का निमित्त तो न बनें। यदि हम माता- पिता की सेवा न कर सकें और यदि हम किसी का हाथ पकड़ कर न चल सकें तो किसी पकड़े हुए हाथ को मझधार में तो न छोड़ दें। यदि हम किसी को ज्ञान-दान न कर सकें, तो किसी को फर्जी डिग्री बेचने का काम तो ना करें। यदि हम किसी को घर बना कर ना दे सकें, तो किसी का घर तोड़कर उसे सड़क पर लाने का काम तो ना करें। बस, हम इतना भी कर लें तो फिर हम शायद इंसान कहलाने लायक तो रहेंगे।

यदि देश के सब नागरिक तय कर लें कि वह देवत्व का भाव उत्पन्न न कर सकें किंतु शैतान बनने से बच सकें और इंसानियत का धर्म निभाएं, इस देश को उन्नत देश बनाने में अपना योगदान देंगे। वैसे इंसान बनना इतना कठिन भी नहीं है। इसके लिए केवल अपने स्वार्थ एवं लोभ को वश में रखने की आवश्यकता है। पैसा कमाना बुरी बात नहीं है, लेकिन उसके लिए दूसरे की लाश पर पांव रखकर आगे बढ़ना कुछ ठीक नहीं। जीवन में आगे बढ़ना गलत बात नहीं है, लेकिन साथी को गिराकर आगे बढ़ना तो अच्छी बात नहीं है।

आइये, हम नये साल में नया संकल्प लें कि हम कोई ऐसा काम नहीं करेंगे, जिससे हम किसी के जीवन में कष्ट पैदा करने का माध्यम बनें। यदि हमें कुछ करना ही है तो हम किसी की सहायता करें, किसी भूखे के लिए भोजन की व्यवस्था करें, प्यासे के लिए पानी की व्यवस्था करें, किसी रोते हुए व्यक्ति के आंसू पोंछ लें, किसी बड़े बुजुर्ग के साथ कुछ समय बिता लें। यह सब हम कर पायेंगे यदि हम मोबाइल पर बिताने वाले समय में से कुछ समय कम कर सकें। वर्ष 2023 कई चुनौतियों वाला साल भी होगा। इन चुनौतियों का मुकाबला हम तभी कर पाएंगे जब हम अपनी इंसानियत को संभाल कर रखेंगे और साथी इंसान को आगे बढ़ाने में अपनी भूमिका निभाएंगे।

तभी देश के सभी नागरिक एक दूसरे के दुख दर्द में साझेदार बनकर, एक दूसरे की प्रगति में भागीदार बनेंगे, तब ही सब इंसानियत का धर्म निभाने वाले माने जाएंगे और तब ही हमारा देश कहीं अधिक सहकार वाला, सद्भाव वाला, भाईचारे वाला, घृणारहित, प्रेम से परिपूर्ण देश बन पाएगा।

यह कल्पना साकार हो सकती है, यदि हम केवल एक प्रण लें कि वर्ष 2023 में हम इंसान बन कर रहेंगे और इंसानियत के धर्म का पूर्णतया पालन प्रण- प्राण से करेंगे। ❑

411, फाऊनटेन स्क्वायर, ललित होटल के पीछे, जवाहर सर्किल, जयपुर-302017
मो. नं.-9414265588
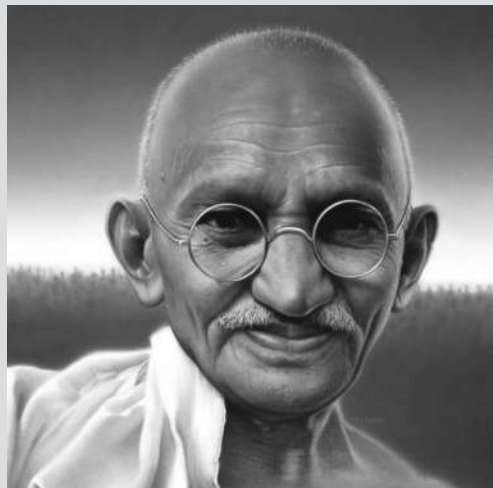
हृदय की शिक्षा-2

❑

सही ढंग की शिक्षा का निर्माण करने के लिए व्यक्तिगत जीवन की पवित्रता एक अनिवार्य शर्त है। हजारों विद्यार्थियों से मेरी जो मुलाकातें होती हैं और विद्यार्थियों के साथ मेरा जो सतत पत्र-व्यवहार होता है- जिसमें वे मुझ पर विश्वास करके अपनी अत्यन्त भीतरी भावना भी बे-खटके कह डालते हैं-उनसे मुझे बिल्कुल स्पष्ट मालूम होता है कि इस दिशा में बहुत सुधार की आवश्यकता है। मुझे विश्वास है कि तुम सब अच्छी तरह समझते हो कि मेरा क्या आशय है। हमारी भाषाओं में विद्यार्थी शब्द का पर्यायवाची एक सुन्दर शब्द है, वह है 'ब्रह्मचारी'। विद्यार्थी शब्द गढ़ा हुआ है और ब्रह्मचारी का घटिया पयार्य है। मुझे आशा है कि तुम्हें ब्रह्मचारी शब्द का अर्थ मालूम है। इसका मतलब ईश्वर की खोज करने वाला, इस तरह का आचरण करने वाला मनुष्य है, जिससे वह कम से कम समय में ईश्वर के नजदीक पहुंच जाय। संसार के तमाम बड़े-बड़े धर्म आपस में कितने ही मतभेद रखते हों, फिर भी एक बुनियादी बात पर वे बिल्कुल सहमत हैं कि अशुद्ध हृदय की कोई भी स्त्री या पुरुष भगवान के सम्मुख नहीं पहुंच सकता। हमारा वेदों का सारा ज्ञान या पाठ, संस्कृत, लैटिन, ग्रीक और दुनिया भर की दूसरी चीजों का सही ज्ञान कुछ भी काम नहीं आयेगा, अगर वह हमें हृदय की पूर्ण शुद्धता प्राप्त न कराये। सब प्रकार के ज्ञान का लक्ष्य चरित्र का निर्माण होना चाहिये। ❑ महात्मा गांधी

यंग इंडिया, 1.9.1921

लेख

बाबा बलवंत सिंह

❑

अवध प्रसाद

❑

गांधीवादी विचारक अवध प्रसाद जी लम्बे समय से सेवा ग्राम से जुड़े रहे हैं। श्रम भारती खादी ग्राम–परिवार शाला में सेवाएं दी हैं। सीखा–पढ़ा है। बापू के सानिध्य के अलावा विनोबा और बाबा बलवंत सिंह जैसे कई आचार्यों का संग रहा है। प्रस्तुत लेख बाबा बलवंत सिंह की भूली बिसरी यादे हैं।❑ सं.

मेरा गांधी जी के सेवाग्राम में स्थायी रूप से रहना नहीं हुआ। बीच-बीच में वहां जाना और वहां के स्थायी निवासियों के मुंह से उनके अनुभव सुनने में मेरी रुचि हमेशा रही। उनकी बातें मुझे अनोखी लगती थीं। अब दशकों बाद उन बातों को नई पीढ़ी को सुनाने में प्रसन्नता हो रही है। मैं यहां केवल उन्हीं बातों का उल्लेख करूंगा जिन्हें मैंने सुना ही नहीं समझा भी। यादों में कुछ ऐसे नाम हैं जो अब भले ही विस्मृत हैं मगर जिनके प्रति मन में श्रद्धा उपजती है। जैसे आचार्य परचुरे शास्त्री (कुष्ठ रोगी), बौद्ध कौसम्बी, आचार्य आर्यनायकम एवं आशा देवी आर्यनायकम (नयी तालीम), बाबा बलवंत सिंह (कृषि-गोपालन), हीरा भाई (भोजनालय), कनकमल गांधी, ठाकुरदास बंग, आचार्य विनोबा भावे (पवनार) आदि। इनमें कुछ से मिलना हुआ और कुछ के बारे में वहां के लोगों से सुना।

सबसे पहले याद आते हैं कुछ समय जयपुर में रहे बाबा बलवंत सिंह। वे मूलतः उत्तर प्रदेश के किसान थे। कुछ दिन ब्रिटिश सेना में सैनिक भी रहे लेकिन वहां राष्ट्रभक्ति दिखाने के कारण ब्रिटिश सरकार ने उन्हें दो साल जेल में रखा। बाहर आने पर वे पुनः खेतीबाड़ी और पशुपालन में लग गये। ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे। किसी ने बताया कि गांधी जी दिल्ली आये हुए हैं तो वे मुजफ्फरपुर से चल कर गांधीजी से मिलने दिल्ली पहुंच गये। वहां मालूम हुआ कि गांधीजी ट्रेन से सेवाग्राम (वर्धा) जा रहे हैं। वे भी उसी ट्रेन में बैठ कर वर्धा पहुंच गये। सेवाग्राम आश्रम उस समय अपनी प्रारम्भिक अवस्था में था। उन्होंने गांधी जी से आश्रम में रहने की इजाजत मांगी और वह उन्हें मिल गई। उनकी रुचि को देखते हुए गांधीजी ने उन्हें आश्रम में खेती और गोपालन का काम देखने को कहा।

खुद बलवंत सिंह के शब्दों में मैं तो ठेठ गांव का ठहरा। मेरी बोली भी अक्खड़ थी। किसी से नहीं डरता था। आश्रम के अन्य लोग गांधीजी से बात करने में संकोच करते थे। मुझे कोई संकोच नहीं होता था। जब गांधीजी अंग्रेजों से नहीं डरते, तो मैं गांधीजी से क्यूं डरूं। इसलिये कईं लोग जो कुछ बातें गांधीजी से कहने में हिचकते थे वे मुझसे कहलवा देते थे। बहुत से लोग मुझे मुंहफट मानते थे। लेकिन गांधीजी मेरी बात का कभी बुरा नहीं मानते थे। गांधीजी के निधन के बाद बाबा का सेवाग्राम में मन नहीं लगा तो वे राधाकृष्ण बजाज की प्रेरणा से राजस्थान आ गये। पहले सीकर में रहे फिर जयपुर के पास दुर्गापुरा स्थित राजस्थान गो सेवा संघ आ गये और जीवन पर्यंत उसे प्रफुल्लित किया। उन्हीं

दिनों 1969-70 में हम जयपुर के कुमारप्पा ग्राम स्वराज संस्थान में आ गये थे। राधाकृष्ण बजाज का अक्सर जयपुर आना होता था। मेरा उनसे सीधा परिचय नहीं था। वे इतना जानते थे कि 'नयी तालीम' के एक मात्र विद्यार्थी ने पीएचडी पढ़ाई की है, लिखता भी है। वैसे वे मेरी पत्नी करुणा को बचपन से जानते थे। बाबा बलवंत सिंह ने सेवाग्राम की यादों और व्यक्तियों के बारे में कुछ लिख रखा था। तरतीब से उसकी पुस्तक कैसे बने, यह समस्या थी। बजाज ने गो सेवा संघ बुलाकर बाबा से कहा, बलवंत सिंह यह डॉ. अवध है। यह तुम्हारे साथ बैठ कर पुस्तक ठीक कर देगा। बाबा गुस्सा हो गये। कहने लगे क्या मैं बीमार हूं? मुझे डाक्टर नहीं चाहिए, इसे कहो अपने घर जाये।' बजाज ने जब उन्हें पूरी बात समझाई तब बाबा ने हां भरी।

बाबा ने अपनी यादों का जो पिटारा खोला उनमें से कुछ का मैं यहां साझा करता हूं।

एक बार बाबा बलवंत सिंह गांधीजी के पास जा कर बैठ गये। उस समय बापू चरखा कात रहे थे तथा वहां और कोई नहीं था। थोड़ी देर बाद गांधीजी बोले बलवंत, क्या कहना है, कहो। बलवंत सिंह चुप बैठे रहे। गांधी जी ने फिर पूछा क्या कहना है? जब बापू ने तीसरी बार पूछा तो बलवंत के मुंह से एक शब्द निकला बा। क्या बा ने डांटा है? कुछ कहा है? बलवंत सिंह ने धीमे से कहा बा की बोली मुझे अच्छी नहीं लगती, गुस्सा आता है। बापू बोले बस इतनी सी बात। क्या तुम्हारी मां नहीं डांटती थी? बाबा बोले हां डांटती थी और मारती भी थी। क्या प्यार नहीं करती थी? उत्तर था करती थी। और बस बलवंत सिंह हंसते हुए बाहर भागे और सीधे बा के कमरे में गये, पैर छूए और हंसते हुए वहां से चल दिए। बा कुछ समझ नहीं सकी। लेकिन तब से बलवंत सिंह उन्हें बा की बजाय मां कहने लगे। यह संस्मरण सुनाते हुए बाबा के नेत्रों से आंसू झर रहे थे।

सेवाग्राम में बाबा सभी काम लगन से करते थे। उलाहना, डांट डपट और आलोचना को सुन कर भी मजे लेते थे। मैं तो मसखरा सेवक था। गुस्सा आता तो बापू से कह देता। उनका स्नेहमय उत्तर सुन कर मन शांत हो जाता। एक समय आया जब खेती, पशुपालन और आश्रम में ज़मीन की सुरक्षा की कमी के कारण मेरा मन खट्टा हो गया और मन में आया कि आश्रम में नहीं रहना। मैंने बापू के पास जाकर कहा, बापू में आश्रम से जा रहा हूं, नहीं रहूंगा। बापू का उत्तर था ठीक है जाओ। जब मन हो तो आ जाना। मैं करीब छह माह तक घर-गांव इधर उधर भटकता रहा। फिर सोचा सेवाग्राम की सेवा ही अच्छी है। मैं सीधे बापू के पास जाकर दरवाजे पर खड़ा हो गया। बापू ने इतना ही कहा आ गये, खेती और गायें संभालो। मैं पुनः काम में लग गया। ऐसा आकर्षण था बापू का, आश्रम का।

अपनी यादों के गलियारे के दरवाजे खोलते हुए बाबा ने मुझे कहा एक बात बताऊं तुमको, तुम तो हंसोगे। एक दिन आश्रम के एक कार्यकर्ता के पेट में दर्द उठा। उस समय डॉ. सुशीला बहन भी वहां नहीं थी। मन में सोचता रहा क्या ऐसे काम के लिये इसे बापू के पास ले जाना ठीक होगा? पर क्या करता। ले गया और उसका कष्ट बताया। बापू ने पूछना शुरू किया। क्या-क्या खाया? उसने बता दिया। तो पूछा और क्या खाया? उत्तर था गन्ना चूसा था। बापू ने कहा गन्ना चूसने से ही पेट में दर्द है। यह सुन कर मैं ज़िद पर अड़ गया और कहने लगा कि मैं ठेठ किसान हूं। गन्ना चूसने से पेट में दर्द नहीं

हो सकता है। मैं दिन भर गन्ना चूस कर बता सकता हूं। मैं यहां तक कह गया कि आपकी बात गलत है। बापू तो बापू थे, जादूगर थे। बोले रातभर देखो। सुबह इसका शौच और एक पतला कपड़ा लेकर आना। मैं तो अचंभे में पड़ गया। पर क्या करता। सुबह एक मिट्टी के बर्तन में उसका शौच, कपड़ा और पानी लेकर पहुंचा। बापू ने शौच को कपड़े में डाल कर पानी से छनवाया। अंत में बिना पचे गन्ने के छिलके कपड़े में रह गये। बापू ने कहा देखो इसी से पेट में दर्द होता था। अब ठीक हो गया ना। कार्यकर्ता ने हां भरी। मैं चकित रह गया। क्या करता। तुम कहोगे गांधी बाबा तो शौच को भी छनवाते थे। उनके लिये सभी काम एक समान थे।

बाबा बलवंत सिंह के मुंह से सुनी एक और घटना। मेरे जिम्मे खेती और गोशाला थी। मुझे गायों और बछड़ा बछड़ियों से प्रेम था। सभी जानवर खुले में रहते थे। बरसात और जाड़े के दिनों में कठिनाई होती थी। पर उनके लिये शेड नहीं बन पा रहा था। एक बार जोर की बरसात हो रही थी। सभी पशु परेशान थे। उन्हें संभालते हुए मैं भी भीग गया था। उस समय गांधीजी भी आश्रम में ही थे। कोई मीटिंग हो रही थी जिसमें देश के बड़े बड़े नेता बैठे थे। मैं असमंजस में था कि क्या करूं। मैं अपने गीले कपड़ों में ही उस कमरे के दरवाजे पर पहुंच गया जहां मीटिंग चल रही थी। वहां से मैं बोल पड़ा आप बड़े लोग कमरे में बातें कर रहे हो हमारी गायें, बछड़े, बछड़ी बरसात में भीग कर परेशान हो रहे हैं। यह कह कर मैं दरवाजे के किनारे पर खड़ा हो गया।

बापू बर्तन साफ करना छोड़ कर उठते हुए बोले कुमारप्पा तुम हमसे अच्छे हो। कुंवारे हो। इतनी डांट तो नहीं सुननी पड़ती। बा बोली सुन लिया न उलाहना।

बापू ने तुरंत कहा महादेव गायों के लिये कल शेड बन जाना चाहिए। बलवंत सिंह ठीक कह रहा है। यह जरूरी है। दो तीन दिन में पशुओं के लिये शेड बन गया। कईं आश्रमवासियों ने मुझसे कहा मालूम है तुम्हें, मीटिंग में बड़े बड़े नेता थे, तुम गीले कपड़ों में वहां घुस गये। मैंने कहा मेरे लिये तो केवल बापू बड़े हैं, दूसरों को मैं नहीं जानता।

ऐसे ही बाबा ने मुझे मगनबाड़ी, वर्धा की एक घटना सुनाई। हम सब वहीं थे। जे. सी. कुमारप्पा हमें ग्रामोद्योग के बारे में पढ़ाते थे। कुमारप्पा कर्मठ विद्वान थे और अविवाहित थे। वहां सामूहिक भोजन के बाद बर्तन साफ करने की ड्यूटी लगती थी। एक दिन बापू को पता नहीं क्या सूझा कि बोले चलो कुमारप्पा आज हम लोग बर्तन साफ करते हैं। बापू और कुमारप्पा दोनों बर्तन साफ करने लगे। उधर मगनवाड़ी के हॉल में देश के कईं वरिष्ठजन बापू का इंतजार कर रहे थे कि भोजन के बाद मुलाकात होगी। यह सब बा ने देख लिया। वे वहां आकर गुस्से में कहने लगी तुम लोगों को समझ में नहीं आता। तुम लोगों के लिये देश से बड़ा काम बर्तन साफ करना हो गया है। यह काम तो हम लोग भी कर सकते हैं। फिर बा गांधीजी की तरफ इशारा करते हुए बोली ये तो कुछ समझते नहीं। कुमारप्पा तुम भी नहीं समझते? यह सुन कर बापू बर्तन साफ करना छोड़ कर उठते हुए बोले कुमारप्पा तुम हमसे अच्छे हो। कुंवारे हो। इतनी डांट तो नहीं सुननी पड़ती। बा बोली सुन लिया न उलाहना। बाद में मैंने और एक और ने बचे हुए बर्तन साफ किए। मुझे बापू और बा की यह तकरार हमेशा याद रहती है।

आखिर में बाबा बलवंत सिंह का एक और किस्सा जिसका मैं खुद गवाह हूं। बात राजस्थान गो सेवा संघ की है। मैंने देखा किसी बात पर बाबा और बजाज में विवाद चल रहा है। दोनों गुस्से में थे। मैं अचंभे में था। विवाद इतना बढ़ा कि बजाज गुस्से में वहां से चले गये। थोड़ी देर बाद मैं क्या देखता हूं कि बाबा बजाज के पास गये और अगले दिन क्या करना है उस पर ऐसे बात करने लगे जैसे कुछ देर पहले कुछ हुआ ही न हो। अगले दिन की बात खत्म होने पर बजाज को मैंने यह कहते सुना बलवंत सिंह तुम जो कह रहे थे वही ठीक था, वैसा ही करना है। मैं आश्चर्यचकित रह गया। मेरे मुंह से निकल गया अभी तो आप लोग । बजाज जी ने जवाब दिया यह सब बापू की शिक्षा है। तुम जो अपना काम करो। हम लोगों से कुछ सीख सको तो सीख लो। ❑

कुमारप्पा ग्राम स्वराज्य संस्थान, बी–190, यूनीवर्सिटी मार्ग, बापू नगर, जयपुर–302015
मो. नं.–9079680431

पुस्तक–समीक्षा

सुन्दर उदासी में होती है कविता

❑

साहित्य अकादमी पुरस्कार समेत अनेक सम्मानों से विभूषित कवि, लेखक और गांधी व अहिंसा के विचारों के मर्मज्ञ नंदकिशोर आचार्य की कविताओं का नवीनतम संकलन 'फिर भी है कृतज्ञ पेड़' हमारे हाथ में है। संकलन में 2016 से 2021 के बीच लिखी उनकी 112 कविताएं हैं जिसमें अज्ञेय द्वारा संपादित सप्तकों में से चौथे सप्तक का यह कवि शब्दों की किफायती बरतते हुए ठहराव और लय वाली भाषा में अधिकतर खुद से बात करता उपस्थित है। इसीलिए यह संकलन हमें आचार्य जी की नवीनतम जीवन दृष्टि जानने का अवसर भी प्रदान करता है।

संकलित कविताओं में जीवन के अनेक रंग नहीं है। स्पष्ट तौर पर सिर्फ दो रंग हैं, दुःख और सुख के,जिनके जरिये कवि मानव जीवन की नियति का अन्वेषण करता नज़र आता है तो उम्र के साथ क्षत विक्षत होती देह के लिए काल को पराजित कर अपनी कला की विजय स्थापित करने का भी वह आकांक्षी है। अपनी हार पर/ सर पटक कर रह जाता है/ काल/ और उग्र होता।

संकलन में तीन खंड हैं: 'बारिश के परस भर', 'प्रभु है वह इसलिए' और 'न होकर होना'। तीन भिन्न आयाम होते हुए भी उनमें जीवन की भंगुरता की एक निरन्तरता है। इन कविताओं में कवि का सूनापन और खामोशी बोलती है: 'अपने शब्दों में लेकिन/ कहता नहीं मैं/ तुम को/ दरअसल छुपाता हूं – छुपी होती है खामोशी/ शब्दों के बीच में जैसे / कविता हो कर'। कवि का अकेलापन ऐसे भी बोलता है: 'घर का ख्वाब संजोये/ इसी तरह/ बेघर रहते हैं हम'। हालांकि कवि को कोई तलाश नहीं है, डूबने का भय नहीं है, मगर डूब कर तर जाने की लालसा जरूर है। मुरझा जाना, सूख जाना, झर जाना, रीत जाना, मैं भी सपना देख सकता हूं/ देखता हूं। अधूरे से पूरा होने की चाह में।

सुखों के नीचे दबी दर्द की अनुभूति करते कवि की रचनाएं यही रेखांकित करती है कि कविता की रचना दुख से ही होती है। शायद इसलिये खिलखिलाती हंसी के विस्मृत होने का दर्द लिए हुए कवि बारिस के परस की आकांक्षा रखता है।

संकलन की कविताएं इस बात का भी प्रमाण देती हैं कि कवि खुद अपने लिये ही रचता है। अपनी रचना में

गांधीवादी विचार धारा के सुप्रसिद्ध लेखक, विचारक और अनेक साहित्य सम्मान से सम्मानित कवि नन्द किशोर आचार्य का नवीन संकलन है: 'फिर भी कृतज्ञ है पेड़'। ❑ सं.

डॉ. पद्मजा शर्मा पिछले चालीस बरस से कविता, शब्दचित्र, लघुकथाएं और कहानियां लिख रही हैं। साहित्यिक हस्तियों के साक्षात्कार की किताब 'रू ब रू' सहित 23 किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। आपकी कविताओं का सिन्धी, अंग्रेजी, बांग्ला और राजस्थानी में अनुवाद। शब्दचित्रों की पुस्तक 'हंसो ना तारा' पर आपको साहित्य के प्रतिष्ठित पुरस्कार 'वागीश्वरी सृजन सम्मान' तथा घासीराम वर्मा साहित्य पुरस्कार, सृजन साहित्य सम्मान के साथ ही कविता की पुस्तक 'मैं बोलूंगी' पर वर्ष 2018 का राजस्थान साहित्य अकादमी का 'सुधीन्द्र पुरस्कार' भी मिला है। फिलहाल आप जोधपुर में रहते हुए स्वतंत्र लेखन कर रही हैं। ❑

डॉ. पद्मजा शर्मा

बच्चे

❑
जिस घर में बच्चे
खिल खिल हंसते हैं
उस घर में
किसी प्रार्थना की जरूरत नहीं

अभी सब चैन की नींद सो जाओ
कि जाग रहे हैं बच्चे
पृथ्वी पर

इस रात हम सब टहलने जा सकते हैं
कि बच्चों की निगरानी पर हैं
आसमान के सारे तारे

आओ बच्चों से तुतलाकर बात करें
कल ये बड़े हो जाएंगे

बच्चे चिड़ियों की तरह चहक रहे हैं
सीख लें इनसे चहकना
हम भी

अभी बच्चे सपनों में उड़ रहे हैं
अनंत आसमान में
ध्यान रहे कोई बाज न आ जाए

यह दृश्य कितना मनभावन है
कि ट्यूशन का समय है
और बच्चे गेंद खेल रहे हैं

सर्दी की धूप - से बच्चे
कच्चे सूत - से बच्चे
पहुंचे हुए अवधूत - से बच्चे
❑

15 - बी, पंचवटी कॉलोनी,
सेनापति भवन के पास रातानाडा,
जोधपुर (राज.) 342011

स्वयं से ही संवाद करता है। कभी वह अपने खयालों को इस प्रकार उधेड़ता है, बुनता है कि रचना अलौकिक हो जाती है। किसी को सुनाने के लिये नहीं। किन्तु जब वह किताब के पन्नों पर छप कर आती है तो वह सबकी हो जाती है अपने-अपने मायनों के साथ।

जीवन के प्रकाश पर अंधकारमय मृत्यु की विजय को ईश्वर की कृतज्ञता का ज्ञापन बताने वाला कवि ईश्वर को चुनौती वाला उपालंभ भी देता है' ज़िंदा क्यों नहीं रह सकते हो/मेरे मरने के बिना/ अपने आप - अगर ईश्वर हो'। और यह भी कि कृतज्ञ है ईश्वर अंधेरे का/ अपनी बलि दे कर/ जिस ने रचा है उस को। मृत्यु के भय को छिटकाते हुए खुद अपने को शब्दों में खोजता है।

तीसरे खंड 'न होकर होना' में कवि का भावुक हृदय स्मृतियों की धुंध में अतीत को समेटते हुए कहता है स्मृति हो सकती है कविता/ उपस्थिति नहीं।यह खंड चन्द्रकला की स्मृति में कवि याद करता है कोई पाप नहीं किया होता / जिन्होंने/ सबसे अधिक क्यों वे ही/ भुगतते हैं? -पूछा पोते ने तुम्हारे/ तुम्हारी बीमारी से व्यथित फिर कहता है मैंने कहना चाहा/ लेकिन कहा नहीं - यीसु के वारिस हैं वे/ हमारा पाप सर ले कर/ सलीब पर थूक गया था जो। जो जीवन में कहा नहीं जा सका उसे कविता में कह कर कवि हल्का होना चाहता है मगर पाठक को भारी कर जाता है।

संकलन कि सभी कविताएं छोटे छोटे सूत्रों की तरह है, मार्मिक हैं। मानसरोवर झील के शांत उज्ज्वल जल की तरह। मगर वे गूढ नहीं है जिसका भाषा-टीका किया जाय। ❑

राजेन्द्र बोड़ा

पर्यावरण

अपामार्ग संपूर्ण औषधि

❑

अपामार्ग एक सर्वविदित क्षुपजातीय औषधि है। इसका वैज्ञानिक नाम 'अचिरांथिस अस्पेरा' (Achyranthes aspera) है। हिन्दी में इसे 'चिरचिटा', 'लटजीरा', 'चिरचिरा' आदि नामों से जाना जाता है। इसे इसके बीजों की स्थिति के कारण उल्टाकांटा भी कहा जाता है। कहीं-कहीं इसे कुकुरघास भी कहते हैं। संस्कृत में अपामार्ग व अंग्रेजी में Rough Chaff Tree कहा जाता है।

इसके पत्ते कुछ गोल व खुरदुरे होते है, इसके तने व टहनियां गांठ युक्त होते है साथ ही इसकी सबसे बड़ी पहचान यह है कि इसके फूल छोटे-छोटे कांटेदार होते है। जिसके निकट जाने से यह कपड़ों पर चिपक जाते हैं।

यह पौधा एक से तीन फुट ऊंचा होता है और भारत में सब जगह घास के साथ अन्य पौधों की तरह पैदा होता है। खेतों की बागड़ के पास, रास्तों के किनारे, झाड़ियों में, शहरों के बाग-बगीचों के बाहर और खुली जगह में यह सरलता से पाया जा सकता है। यह वर्षा ऋतु में पैदा होता है। इसके पत्ते अण्डाकार, एक से पांच इंच तक लंबे और रोम वाले होते हैं। ऋतु के अंत तक बढ़ता है तथा शीत ऋतु में पुष्प फलों से शोभित होता है। ग्रीष्म ऋतु की गर्मी में परिपक्व होकर फलों के साथ ही शुष्क हो जाता है। इसके पुष्प हरी गुलाबी आभा युक्त तथा बीज चावल सदृश होते हैं, जिन्हें ताण्डूल कहते हैं। इस पर जौ के समान लंबे बीज लगते हैं। इसकी पुष्पमंजरी 10-12 इंच लंबी होती है, जिसमें विशेषत: पोटाश पाया जाता है। नमी वाले स्थानों में इसके पौधे एक से अधिक वर्ष की अवधि तक भी जीवित रहतें हैं।

अपामार्ग क्षुधा, तृष्णा, अनपत्यता में प्रयुक्त होता है सम्पूर्ण औषधियों की अपेक्षा अपामार्ग के ही ये काम होते हैं।

शरद ऋतु के अंत में पंचांग (मूल, तना, पत्र, पुष्प, बीज) का संग्रहण करना सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, जिसे एक वर्ष तक प्रयुक्त किया जा सकता है।

आयुर्वेद व दैनिक उपयोग की दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। लटजीरा का सर्वांग विभिन्न रोगों में औषधीय प्रयोग में आता है। अपामार्ग दस्तावर, तीक्ष्ण, अग्नि प्रदीप्त करने वाला, कड़वा, चरपरा, पाचक, रुचिकारक और वमन, कफ, मेद, वात, हृदय रोग, अफारा, बवासीर, खुजली, शूल, उदर रोग तथा अपची इत्यादि में चमत्कारिक रूप से प्रभावी है। अपामार्ग खाने से ताकत आती है। पाचनशक्ति बढ़ाने के लिए यह पौधा काफी फायदेमंद है। इसके बीजों की खीर बनाकर खाने से शरीर कमजोर नहीं होता है। साथ ही मोटापा दूर करने में मददगार होता है।

देवेन्द्र भारद्वाज

❑

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के उद्यान में लगे औषधीय पौधों और वृक्षों के परिचय के क्रम में हम इस बार 'अपामार्ग' का परिचय दे रहे हैं। ❑ सं.

अपामार्ग में पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में निहित होते हैं। इसकी 100 ग्राम की पत्तियों में 3.3 ग्राम प्रोटीन, 417 मिलीग्राम कैल्शियम, 68 मिलीग्राम फास्फोरस, 12.5 मिलीग्राम आयरन, 5,311 माइक्रोग्राम बीटा कैरोटिन और 94.56 मिलीग्राम विटामिन–सी होता है। जुलाई 2017 में जर्नल ऑफ ट्रेडिशनल एंड कॉप्लीमेंट्री मेडिसिन में प्रकाशित अध्ययन बताता है कि वेदरनयाम में परंपरागत वैद्य महिलाओं की प्रजनन समस्याओं का इलाज इस पौधे से करते थे।

इन दिनों अपामार्ग अपने औषधीय गुणों के कारण लोकप्रिय हो रहा है। इस पौधे की जड़ का इस्तेमाल दातून के रूप में किया जाता है जिससे मुंह के कीटाणुओं को मारा जा सकता है। इसके जड़ को पीसकर काली मिर्च और शहद में मिलाकर सेवन करने से खांसी का उपचार किया जा सकता है। अपामार्ग की पत्तियों को पीसकर ततैया या मधुमक्खी जैसे कीट के दंश वाले स्थान पर लेप करने पर आराम मिलता है। प्याज के साथ इसे पीसकर लेप करने से त्वचा से संबंधित रोगों से छुटकारा पाया जा सकता है। छाछ के साथ इसका सेवन करने पर डायरिया की रोकथाम की जा सकती है। अपामार्ग का सेवन वजन घटाने में भी मददगार है। हालांकि इसका अत्यधिक उपयोग स्वास्थ्य के लिए हानिकारक भी हो सकता है।

फोड़े फुंसियों पर इसकी पत्तियों को पीसकर सरसों के तेल के साथ गर्म करके लगाने से वे ठीक हो जाते हैं। बवासीर रोग में अपामार्ग पत्ते, काली मिर्च के दाने पीसकर पीने से बवासीर का खून निकलना बंद हो जाता है। मधुमेह में इसके पत्ते का रस नियमित सेवन करना होता है। विषैले जीवों के काटने पर पत्ते व जड़ का रस पिलाने व काटे हुए स्थान पर लगाने से विष का प्रभाव समाप्त होने लगता है। बड़ की वायवी मूल, खजूर पत्र और अपामार्ग के क्वाथ से कुल्ला करने पर दांतो की सभी प्रकार की समस्याएं खत्म होती हैं। खुजली होने पर अपामार्ग का काढ़ा बनाकर उससे नहाना चाहिए, इससे खुजली दूर होती है। पथरी होने पर अपामार्ग क्षार को ठंडे पानी के साथ सेवन करने पर पथरी निकल जाती है। अपामार्ग मूल चूर्ण 6 ग्राम रात में सोने से पहले लगातार तीन दिन जल के साथ पीने से रतौंधी में लाभ होता है। जलोदर (पेट फूलने की समस्या) में अपामार्ग क्वाथ एवं कुटकी चूर्ण सेवन करने से लाभ होता है। इसकी जड़ से दातून करने से दांतों की जड़ें मजबूत और दांत मोती की तरह चमकते हैं।

सितंबर 2014 में पाकिस्तान जर्नल ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेस में प्रकाशित एक अध्ययन बताता है कि अपामार्ग की पत्तियां स्वास्थ्य की बहुत सी समस्याओं जैसे, शारीरिक वजन, हीमोग्लोबिन और प्लेटलेट्स काउंट्स में सुधार लाती हैं।

पौधे का पूजन और ज्योतिष शास्त्र में भी विशेष महत्व होता है। ऋषि पंचमी व्रत में अपामार्ग का विशेष महत्व बताया जाता है, जिसका वैज्ञानिक आधार है, स्त्रियां इसके तने से दातुन, ताण्डूल खीर का सेवन और इसी के अर्क से स्नान करती है जिससे मासिक धर्म संबंधी दोष विकार दूर होता है।

साग का नाम सुनते ही हमारे मन में पालक, मेथी और चौलाई की तस्वीर उभरती है। किन्तु अपामार्ग भी ऐसी ही एक पत्तेदार सब्जी है। तमिलनाडु की जवाधू पहाड़ियों पर रहने वाले आदिवासी बरसात के मौसम में इसका उपभोग नियमित तौर पर करते हैं। पोरियल एक तमिल व्यंजन है। जो कि अपामार्ग के पत्ते व मसूर दाल से बना कर ज्वार, बाजरे या मडुआ की रोटी के साथ खाया जाता है।❑

136, नेमी नगर विस्तार, वैशाली नगर थाने के पास जयपुर–302021
मो. नं.–9414267930

गतिविधि

जोड़–बाकी के विषय पर एक सार्थक चिंतन

एक ही तरह के प्रश्नों को बार–बार हल करने से गणित अच्छी होती है। यह धारणा गलत है। गणित अच्छी होगी जब गणित को दैनिक जीवन से जोड़ा जाये और बालक को दिमाग से सोचने का अवसर मिले। बिना संख्या की समझ के गिनती सुना देने वाले बालकों को यह तो पता होता है कि संख्या 9 संख्या 5 से बड़ी होती है। लेकिन संख्या 9 संख्या 5 से बड़ी क्यों होती है इस बात का जवाब शायद वे नहीं दे पाएं। क्योंकि गिनती जल्दी सिखाने की दौड़ में उन्हें यह नहीं बताया जाता कि संख्या 9 संख्या 5 से बड़ी इसलिए होती है क्योंकि संख्या 5 में कुछ मिलाने पर संख्या 9 बनती है। बच्चों के लिए जरूरी है कि वे अपने ज्ञान का सृजन कर सकें, उन्हें अपने नियमों के निर्माण का अवसर मिले। वे हर चीज के क्यों पर बात करें। शिक्षक, बालकों को गणित के अपने सूत्र बनाना सिखाने की बजाय किताब में दिए सूत्रों को रट लेने पर जोर देते हैं। परीक्षा में एक निश्चित पैटर्न पर बने सवाल की जगह यदि ऐसे प्रश्न आ जायें जिनमें बालकों को थोड़ा सोचना पड़ जाये तो उसे आउट ऑफ सिलेबस करार दिया जाता है। कक्षा में किये गए हर सवाल में क्यों पर जोर हो फिर क्या और कैसे पर, तभी बच्चे गणित में अपने सूत्र बना पाएंगे और समझ बढ़ा सकेंगे।

इसी विचार को धरातल पर उतारने के लिए राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति में 25 और 26 दिसम्बर को गणित शिक्षा विशेषज्ञ हनुमान सहाय के नेतृत्व में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद् (एनसीईआरटी) में प्रोफेसर तथा प्रारंभिक शिक्षा विभाग के अध्यक्ष ए.के. राजपूत एवं डॉ. राजपाल सिंह विशेष तौर पर आये थे।

गणित के हमारे जीवन में प्रयोग के लिए इस कार्यशाला में किशोर–किशोरियों के समूह बनाकर गणित के व्यवहारिक उपयोग के मजेदार खेल भी रचे गये ताकि बच्चों के मन से गणित का हौवा दूर हो सके। ❑

मनीष शर्मा, 57, महावीर नगर, सांघी फार्म, सोनी सेंटर के पीछे, टोंक रोड, जयपुर–302018
मो.नं.–9079767669

समिति में फ़िल्म उत्सव

❑

जयपुर में प्रतिवर्ष जनवरी में अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह होता है। इस बार जयपुर इंटरनेशनल फ़िल्म फेस्टिवल (जिफ) का 15 वां आयोजन था। पहले की भांति इस बार भी राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति सिनेमा कला को देखने की नई दृष्टि देने वाले इस आयोजन का हिस्सा बनी। पांच दिन के समारोह में 63 देशों की 282 चयनित फिल्मों का प्रदर्शन आईनॉक्स सिनेमा की पांच स्क्रीन तथा गुलाबी नगरी की तीन शिक्षण संस्थाओं में उपलब्ध स्क्रीन पर हुआ। समिति के सभागृह की स्क्रीन इनमें शामिल थी। समिति में फेस्टिवल की कुछ नायाब डॉक्यूमेंटरी फिल्में प्रदर्शित की गईं । जैसे भारत के पारसी समुदाय और उनके पारसी थियेटर पर आत्मीय दृष्टि डालती दिव्या कवासजी और जाल कवासजी की फ़िल्म The Show Must Go On ।

एक अन्य फ़िल्म थी मलका शब्ते की Nafkot - Yearning जो उत्तरी इथियोपिया में एक ऐसे समुदाय के बारे में बताती है जो उनके साथ सदियों से हो रहे उत्पीड़न से बचने के लिये अपनी आस्था की पहचान दुनिया से छुपाये रहते हैं। दलित समुदाय के साथ क्या होता है इसका वास्तविक अर्थ इस फ़िल्म में शिद्दत के साथ महसूस होता है।

सिनेमा की डॉक्यूमेंटरी विधा जन संवाद की कितनी सशक्त माध्यम हो सकती है इसे प्रकट किया अपने तरह की तीन अन्य सशक्त डॉक्यूमेंटरी फ़िल्मों ने भी। ऑस्ट्रेलिया की लुक कॉर्निश की फ़िल्म Keep Stepping में हैरतअंगेज़ शारीरिक करतबों और ब्रेक डांस की प्रतिस्पर्धा की दुनिया की बड़ी खूबसूरती से पड़ताल करती है, जबकि यू. जी. मोरीवाकी (जापान) की 'Bring Minyo Back'फ़िल्म वहां के विस्मृत प्राचीन लोक संगीत मीन्यो को फिर से लोगों को याद दिलाने और उसकी आत्मा को बचाए रखते हुए नये अंदाज़ में प्रस्तुत करने के प्रयासों की दिलचस्प जानकारी देती है।

नेदिया फेरिस की Big Little Women जिसमें पुरुष प्रधान समाज में उनके बनाये रीति-रिवाज़ों से स्त्रियों की आज़ादी के संघर्ष को दर्शाया गया था। ❑

स्वत्त्वाधिकारी राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति द्वारा कुमार एंड कम्पनी, जयपुर में मुद्रित तथा 7-ए, झालाना संस्थान क्षेत्र, जयपुर-302004 से प्रकाशित। संपादक- राजेन्द्र बोड़ा